International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 08-07-2020; Accepted: 23-07-2020; Published: 09-08-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 93-95

तुलसीदासरचित "श्रीरामचरितमानस" में वर्णित चातक पक्षी के व्यवहार का समग्र ताथ्यिक अध्ययन एवं वैज्ञानिक जांच

पीताम्बर कौशिक
स्कूल ऑफ़ सोशल साइंसेज़, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, झारखण्ड, भारत

सारांश
चातक पक्षी की वर्षा की आस भारतीय साहित्यिक परम्परा में अटल प्रेम के प्रतीक के तौर पर कायम रही है। आकुलता के बावजूद चातक का अडिग धैर्य स्थिर प्रेम की मिसाल के तौर पर प्रसिद्ध है। रामचरितमानस में इस सन्दर्भ में स्वाति नक्षत्र का एक विशेष उल्लेख भी आता है तथा चातक की केवल इस नक्षत्र की वर्षा को पाने की विशेषता भारतीय कथाओं में नित्य ही मिलती है। यह शोध-पत्र एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से रामचरितमानस में उल्लेखित चातक की प्रकृति सम्बन्धी विवरणों और कथनों तथा प्रचलित मान्यताओं की जांच करता है।

मूल शब्द: चातक, स्वाति, नक्षत्र, रामचरितमानस, वर्षा

1. प्रस्तावना
रामायण के विभिन्न संस्करणों व वर्णनों में पक्षी न केवल दृश्यों की बारीकी और प्राकृतिक परिप्रेक्ष्य के पूरक के तौर पर उल्लेख पाते हैं अपितु कई प्रसंगों में अहम् भूमिकाएं निभाते हैं। जटायु, सम्पाती, गरुड़ आदि खगों का संकटमोचक की भूमिका में निर्णायक समय पर नायक पात्रों की सहायता हेतु आगमन होता है जबकि काकभुशुण्डि और खगेश का संवाद रामचरितमानस के तीन मूलस्तम्भिक वर्णनों में से एक है। विभिन्न प्रजातियों के पक्षियों को उनके विशिष्ट गुणों के अनुसार बतौर अलंकार, सादृश्य और उपमान अनेक विवरणों में स्थान प्राप्त है। कवि तुलसीदास ने रामकथा को सर्वविदित करने के उद्देश्य से सामान्य जनमानस के लिए सुलभ ग्रन्थ श्रीरामचरितमानस की रचना की। गूढ़ मर्म व दार्शनिक निहित्तार्थ को शास्त्रज्ञान के बिना प्राप्य बनाने हेतु कई आम प्राकृतिक दृश्यों के अवयवों को गुणानुसार उपमा के तौर पर प्रयोग में लाया गया है जिनके माध्यम से मीमांसा जैसे जटिल विषयों में भी भावरस संचार किया गया है। पर्यावास क्षति तथा आधुनिक जीवन में प्रकृति से बढ़ते सामान्य अलगाव के कारण इनमें से कई उपमाएं, जो कि धैर्यपूर्ण सुतीक्ष्ण प्राकृतिक अवलोकन पर आधारित है, आशय-उन्मूलित होती जा रही हैं। ऐसे में इन लुप्तप्राय जैविक सन्दर्भों से पुनर्परिचय न केवल साहित्यिक व सांस्कृतिक अपितु प्राकृतिक संरक्षण में भी मददगार सिद्ध होगा। इस हेतु एक नए सिरे से ऐसे पर्यावरण-आधारित रूपकों का आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतिबद्ध शोध व निरीक्षण आवश्यक है।

2. रामचरितमानस में चातक
रामचरितमानस के बालकाण्ड २६२.३ में तुलसीदास राम के स्वयंवर विजय पर सीता के आह्लाद की तुलना स्वाति नक्षत्र की वर्षा का जल प्राप्त करने पर चातक पक्षी के हर्षाने से करते हैं: "सीय सुखहि बरनिअ केहि भाँती। जनु चातकी पाइ जलु स्वाती ॥" मानस के बालकाण्ड में अन्य तीन जगह चातक के निरंतर मधुर कोलाहल का उल्लेख आता है, एक बार दूसरे खगों के साथ और शेष दो बार वर्षाऋतु के सह-सूचक मेंढकों के साथ। श्रीरामचरितमानस में कुल १६ बार चातक शब्द प्रयोग किया गया है। मानस के अयोध्याकाण्ड ३२४ में चातक (की प्रत्याशा) की समता व स्थिरता की मिसाल दी गयी है: "राम पेम भाजन भरतु बड़े न एहिं करतूति। चातक हंस सराहिअत टेंक बिबेक बिभूति ॥" अयोध्याकाण्ड २३३.२ में चातक के प्रेम को अजर, अचल, पुनीत, और श्रेष्ठ ठहराते हुए लिखित है "जग जस भाजन चातक मीना। नेम पेम निज निपुण नबीना ॥" अयोध्याकाण्ड ५२ में लिखा है "जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत एहि भाँति। जिमि चातक चातकि तृषित बृष्टि सरद रितु स्वाति।।"

3. तथ्य-आधारित विश्लेषण
चातक को निश्छल प्रेम व सुदृढ़ प्रेम-व्रत के चिह्न के तौर पर ख्याति प्राप्त है। चातक पक्षी को "जैकोबिन ककू" यानि "जैकोबिन कोयल" नामक पक्षी के तौर पर पहचाना गया है। इस प्रजाति को "पाईड ककू" अथवा "पाईड-क्रेस्टेड ककू" आदि नामों से भी जाना जाता है। इस प्रजाति का वैज्ञानिक नाम है "क्लेमैटोर जैकोबिनस" और उत्तर भारत में इसकी "सेर्रेटस" नामक उपप्रजाति पाई जाती है जो प्रजनन हेतु भारत को प्रवास करते हैं। चातक पक्षी की विशिष्ट पिपासा शास्त्रीय शैली की साहित्यिक परंपरा में तपस्या, श्रेष्ठ-इच्छुकता, और शुद्धता का एक प्रचलित रूपांकन रही है। महाभारतादि ग्रंथों में चातक को एक ऐसे पंछी के तौर पर उल्लेखित किया गया जिसके सर पर चोंच होती है और जो ऊपर की ओर मुंह कर स्वाति नक्षत्र के काल के अनघ, निर्मल, अभ्रष्ट वर्षाजल का पान करता है। कालिदास के "मेघदूतं" में यक्ष गुज़रते बादल से उसका सन्देश ले जाने हेतु आग्रह करने के क्रम में उसे बताता है की सन्देश ले जाते हुए उसे चातक सुमधुर गायन करता हुआ मिलेगा। नीतिशतक के सैंतालीसवें छंद में भर्तृहरि चातक की मेघों से प्रथम वृष्टिबिंदुओं की शुद्ध, निरीह, व अडिग आस को एक नैतिक व व्यावहारिक अनुदेश के तौर पर प्रतिरूपित करते हैं, यह सीख प्रदान करते हुए की हर मिलते

व्यक्ति से अपनी आवश्यकता पूर्ती की आस लगाना व्यर्थ है। माना ये जाता है कि स्वाति नक्षत्र के प्रथम जल की प्रतीक्षा में चातक महीनों गगन की ओर एकटक देखते हुए गुज़ार देता है। भारतीय उपमहाद्वीप के कई हिस्सों में चातक को बारिश के आने का सूचक माना जाता है। हालाँकि ये ताथ्यिक सत्य तो नहीं है परन्तु अत्याधुनिक तकनीकी कौशल के माध्यम से ये सिद्ध किया गया है कि ये मनगढ़ंत किंवदंतियाँ भी नहीं हैं जो पूर्णतः आधारहीन हों। मशहूर पक्षीविद सत्य चरण लॉ के अनुसार चातक असल में "कॉमन आयोरा" नामक एक छोटी काली-पीली चिड़ियां है, ना की यूरोपीय प्राच्यों द्वारा चिन्हित जैकोबिन कोयल। "पेट बर्ड्स ऑफ़ बेंगाल" (बंगाल की पालतू चिड़ियाँ) नाम की उनकी पुस्तक में वे बताते हैं की किस प्रकार उनकी पालतू आयोरा चिड़ियां केवल ओस एवं पौधों से बिखरे जल बिंदुओं से अपनी प्यास बुझाती थी। परन्तु जैकोबिन कोयल - सी कलगी के अभाव के कारण उनकी ये अवधारणा कमज़ोर मालूम पड़ती है। प्रचलित मत ये है की जैकोबियन कोयल की परों की बनी कलगी की ओर हीं 'सर के ऊपर चोंच' होने के द्वारा संकेत किया गया है। जैकोबियन कोयल का "पिऊ-पिऊ", इस प्रकार का स्वर और कोलाहल भी इसके साहित्यिक उल्लेख से मेल खाता है। हालांकि यहां यह उल्लेखनीय है की स्वाति नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश प्रायः वर्षाऋतु के अंत में अक्टूबर मास में होता है, जिसके माध्यम से दिखाया जाता है की चातक पक्षी निर्मल जल हेतु एक सामान्यतः जलविहीन मास में वर्षा को प्रतीक्षारत रहता है। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि यह पक्षी दूरवर्ती क्षेत्रों में प्रवास करता है और वर्षाऋतु का आगमन और प्रस्थान जम्बूद्वीप के दक्षिणी और उत्तरी क्षेत्रों में क्रमशः कुछ हफ़्तों के अंतराल पर होता है जिस कारण मानसून के आने-जाने के काल अलग-अलग नक्षत्र अवधियों में होता है। सुदूर दक्षिण-पूर्व भारत, जहां जैकोबियन कोयल की दूसरी उपप्रजाति पाई जाती है, अक्टूबर से लेकर दिसंबर अंत तक शीतकालीन उत्तरपूर्वी मानसून से भारी बारिश प्राप्त करता है। इस क्रम में जैकोबियन कोयल के उपप्रजातिवार ऐतिहासिक भूक्षेत्रीय-विस्तार का अन्वेषण आवश्यक है। कई बार स्वाति नक्षत्र के उल्लेख के बिना भी चातक को नववर्षा पिपासु के तौर पर दर्शाया गया है और संभवतः चातक के वास-क्षेत्र की गतिशीलता के कारण ये आभासीय विसंगति उत्पन्न हुई। यह भी ध्यानयोग्य है की सूर्य और चन्द्रमा के गुरुत्वाकर्षक प्रभावों से पृथ्वी के घूर्णन व परिक्रमण के जटिल संयोग और विभिन्न कालचलचक्र बनते हैं। ऐसी विकार लयों में पृथ्वी की धुरी का आवर्तन प्रमुख है, जिसके नतीजतन हर कुछ सौ साल में नक्षत्रों की सूर्य के सापेक्ष आभासी स्थिति परिवर्तित हो जाती है। इसलिए आवश्यक है की ऐसी किसी भी पड़ताल में हम समग्र कालिक सन्दर्भ को ध्यान में रखें।

वाल्मीकि से कालिदास और कालिदास से तुलसीदास के काल तक प्राचीन अवलोकन संस्कृति में निहित्त हो तत्प्रयुक्त होते रहे परन्तु इन कई शताब्दियों के अंतराल के दौरान ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति भिन्न-भिन्न प्रकारों से बदलती रही - कुछ लघु-अवधि बदलाव और कुछ दीर्घावधि। यह भी ध्यान योग्य है की प्रारम्भिक ज्योतिष में २८ नक्षत्र हुआ करते थे जिसमे से अभिजीत नक्षत्र को पृथ्वी की धुरी के आवर्तन-जनित पतन के कारण सूची से निष्कासित कर दिया गया। वेदानुसार नक्षत्रों की सूची कृत्तिका नक्षत्र से आरम्भ होती है तथा कृत्तिका को हीं प्रथम नक्षत्र होने का अतिविशिष्ट दर्जा स्पष्टता से प्राप्त है। परन्तु बाद के ग्रंथों, शास्त्रों और मिश्रित स्रोतों में चित्रा के सम्मुख (विपरीत सामने) नक्षत्रों के प्रारम्भ बिंदु होने की बात की गई है। इस प्रकार अश्विनी नक्षत्र की आरंभिक नक्षत्र होने की दावेदारी सशक्त होती है तथा समय के साथ अश्विनी नक्षत्र हीं प्रथम नक्षत्र के तौर पर प्रचलित हो गया। ऐतिहासिक खगोलीय शोध से ज्ञात हुआ है कि चूंकि वैदिक काल में कृत्तिका नक्षत्र वसंत विषुव (वसंत का वो दिन जब दिवा और रात्रि सामान अवधि के होते हैं) के समय सूर्य के साथ सीधा संरेखित होता था जबकि पूर्वकथित पेंचीदा गुरुत्व व गति प्रभावों के वश में आकर पृथ्वी अंतरिक्ष में कुछ इस तरह पुनर्व्यवस्थित हुई की तदपश्चात वसंत विषुव के दौरान ये उच्च दर्जा कृत्तिका के बजाय अश्विनी नक्षत्र को प्राप्त हुआ। कुछ ग्रन्थ भी इस ओर इशारा करते हैं "मेषादि" (मेष राशि से प्रारम्भ होने वाला) नाम का हवाला देकर। नक्षत्र अंतरिक्ष को २७ एक सामान आकार के भागों में विभाजित करते हैं। इसलिए आदि काल में अगर नक्षत्रों की सूची पे वर्तमान तृतीय स्थान पर आसन्न कृत्तिका नक्षत्र प्रथम स्थान पर हो वसंत विषुव से मेल खाता था तो निश्चितरूपेण स्वाति नक्षत्र को भी दो पायदान पदोन्नत कर हम उसकी वार्षिक स्थिति का अनुमान लगा सकते हैं। इस तर्क सूत्र का अनुसरण करते हुए हम इस नतीजे पर पहुँच सकते हैं की वैदिक काल में स्वाति नक्षत्र वर्ष के उस समय पड़ता होगा जब आज आधुनिक ज्योतिष का हस्त नक्षत्र पड़ता है, जो अनुमान स्वाति को वर्षा ऋतु के दायरे में लाता है। इस प्रकार ये संभावना प्रबल होती है की वाल्मीकि रामायणादि प्राचीन ग्रंथों के रचे जाने के समय स्वाति नक्षत्र के वर्षाऋतु में होने के कारण चातक और इस नक्षत्र का गहरा सम्बन्ध बन गया और तदोपरांत साहित्य में यथारूप, एक स्थापित रूपक के तौर पर संचारित होता रहा।

किसी भी सूरत में ऐसी एक चिड़िया अवश्य है जो चातक के साहित्यिक वर्णनों की कसौटियों पर बहुत हद तक सटीक खरी उतरती हैं। "नेचर कंज़र्वेशन फाउंडेशन" नाम की शोध एवं संरक्षण संस्था ने अत्याधुनिक ट्रैकिंग तकनीकों का प्रयोग कर इस बात की पुष्टि की कि जैकोबियन कोयल के आप्रवास का समय वर्षा ऋतु के आगमन के समय से सटीक मेल खाता है, हर साल मानसून अलग-अलग समय पर आने के बावजूद। "गूगल अर्थ" नामक सॅटॅलाइट-आधारित सुदूर संवेदन तकनीक और कॉर्नेल लैब ऑफ़ ऑर्निथोलॉजी द्वारा चालित "ई-बर्ड" नामक विशाल, साझा, पक्षी अवलोकन, निशानदेही, व जानकारी डेटाबेस के आपसी समन्वय से पक्षी-विज्ञानियों व पर्यावरणविदों के इस समूह ने साल-दर-साल मॉनसून के आगमन व विस्तार को इन पक्षियों के प्रवास अनुरेखण से मेल खाता हुआ सिद्ध किया। इससे यह साबित होता है की भारतीय शास्त्रों और काव्यों में चातक के इस लक्षण का उल्लेख केवल कोरी, निराधार कल्पना का नतीजा नहीं है, बल्कि तीक्ष्ण पर्यवेक्षण का प्रमाणक है।

4. उपसंहार

गोस्वामी तुलसीदासकृत लोकप्रिय सरल, सरस ग्रन्थ श्रीरामचरितमानस आदिकालीन भारतीय प्राकृतिक अवलोकन के विलक्षण विस्तार और प्राञ्जलता को मनोज्ञ रूप से प्रस्तुत करता है। श्रीरामचरितमानस में प्रजातिवार प्रकृत्यानुसार प्रयुक्त नभचर जंतुओं की आकर्षक व रोचक उपमाएं, संज्ञाएँ व अन्य साहित्यिक उपकरण भारतीय लोकावलोकन, प्राकृतिक अध्ययन की परंपरा की व्यापकता, व जन-सामान्य में पर्यावरण के प्रति स्वतः रूचि का ठोस साक्ष्य प्रदान करती हैं। तत्कालीन सुलभ पाए जाने वाले पक्षी सामान्यतः मौजूदा परिदृश्यों से ओझल होते जा रहे हैं। साहित्य का वैज्ञानिक अध्ययन पर्यावरण के प्रति जागरूकता व उत्सुकता प्रेरित करने में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

5. सन्दर्भ सूची

1. तुलसीदास. रामचरितमानस.
2. भर्तृहरि. नीतिशतक.

3. कालिदास. मेघदूत.
4. महाभारत. शांति पर्व.
5. एफ इ कीएय. ए हिस्टरी ऑफ़ हिंदी लिटरेचर. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. 1920; 102-103
6. शिवराजकुमार खाचर. पाईड-क्रेस्टेड ककू क्लेमेटर जैकोबिनस - द हार्बिंगर ऑफ़ द मॉनसून. जर्नल ऑफ़ थे बॉम्बे नेचुरल हिस्टरी सोसाईटी. 1989; 86 (3): 448–449
7. ए जे गैस्टन. ब्रूड पैरासाइटिज़्म बाई द पाईड क्रेस्टेड ककू क्लेमेटर जैकोबिनस. जर्नल ऑफ़ ऐनिमल ईकोलॉजी. 1976; 45 (2): 331–348. doi:10.2307/3878
8. क्लॉड बी टाईसहर्स्ट. सिस्टेमैटिक नोट्स ऑन ईस्ट ऐफ्रिकन बर्ड्स - पार्ट XIV. 32. 1937; 79 (2): 402–415. doi:10.1111/j.1474-919X.1937.tb02182.x
9. टी सी जर्डन. द बर्ड्स ऑफ़ इंडिया. 1. मिलिटरी ऑरफैंस प्रेस, कलकत्ता. 1862; 341
10. सत्य चरण लॉ. पेट बर्ड्स ऑफ़ बेंगॉल (वॉल्यूम 1). ठैकर, स्पिंक & को. 1923; 114-115, 123
11. एच जोंस. द ऑरिजिन ऑफ़ द 28 नक्षत्राज़ इन अर्ली इंडियन ऐस्ट्रोनॉमी ऐंड ऐस्ट्रोलॉजी. इंडियन जर्नल ऑफ़ हिस्टरी ऑफ़ साईंस. 2018; 317-324
12. https://factordaily.com/birds-in-data-counting-cuckoos-and-other-stories/
13. https://ebird.org/news/knowing-the-chataka-pied-cuckoos-and-monsoons
14. https://www.britannica.com/science/Indian-monsoon
15. https://web.archive.org/web/20150322154946/https://vedanet.com/2012/06/13/nakshatras-and-upanakshatras/